17 जुलाई 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन
प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 8 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2541) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आध्यात्मिक विदुषी संगोष्ठी संपन्न

दिल्ली : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के स्वर्ण जयंती के पावन प्रसंग पर श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उस्मानपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में स्वानुभूति महिला मण्डल द्वारा **'आत्मानुभूति : एक विवेचन'** विषय पर दिनांक 5 जुलाई को आध्यात्मिक विदुषी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस गोष्ठी में आत्मानुभूति के विभिन्न विषयों पर श्रीमती शिवानी जैन शास्त्री पार्क, डॉ. ममता जैन रोहिणी, ब्र. प्रज्ञा दीदी आत्मार्थी ट्रस्ट, आत्मार्थी नमन जैन बुद्ध विहार, श्रीमती देशना जैन उस्मानपुर, आत्मार्थी आयुषी जैन शाहदरा, आत्मार्थी पारुल जैन बहादुरगढ, आत्मार्थी प्रियंका जैन, कु. अनुभूति जैन ने अपने विचार व्यक्त किये।

अंत में गोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली ने अपने विचार व्यक्त किये।

मंगलाचरण कु. मेघा जैन एवं संचालन श्रीमती बिन्दु जैन ने किया। संपूर्ण गोष्ठी पण्डित ऋषभजी शास्त्री एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में तथा पण्डित प्रयंकजी शास्त्री के संयोजकत्व में संपन्न हुई।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

38वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(रविवार, दिनांक 2 अगस्त से मंगलवार 11 अगस्त, 2015 तक)

शिविर में जयपुर आने हेतु अपने टिकिट शीघ्र करा लेवें। कृपया आवास आदि की समुचित व्यवस्था हेतु अपने पधारने की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें।

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

अटलांटा (अमेरिका) में शिविर संपन्न

अटलांटा (अमेरिका) : यहाँ जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (**JAANA**) द्वारा दिनांक 28 जून से 2 जुलाई 2015 तक 15वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा ग्रन्थाधिराज प्रवचनसार की गाथा 100 से 102 तक प्रतिदिन दो प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर प्रतिदिन तीन प्रवचन एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई द्वारा समयसार की गाथा 173 से 176 के आधार से उपयोग के प्रयोग विषय पर प्रतिदिन तीन प्रवचनों का लाभ मिला।

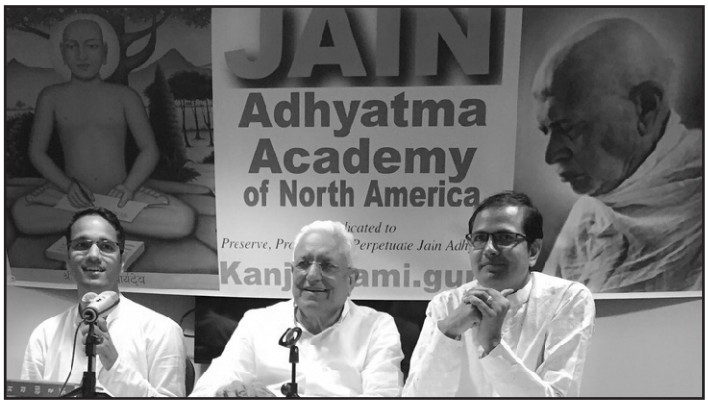

इसप्रकार प्रतिदिन 8 घंटे प्रवचनों के अतिरिक्त सायंकाल ज्ञानगोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसमें आत्मार्थी मुमुक्षुओं की जिज्ञासाओं का समाधान उक्त तीनों विद्वानों के माध्यम से किया जाता था। प्रतिदिन प्रातः नित्य-नियम पूजन का कार्यक्रम भी हुआ। इसप्रकार प्रतिदिन लगभग 9-10 घंटे तत्त्वज्ञान की अखण्ड धारा प्रवाहित हुई। संपूर्ण कार्यक्रम में अमेरिका के विविध प्रांतों से पधारे शताधिक लोगों ने धर्मलाभ लिया। संपूर्ण कार्यक्रमों का सफल संयोजन एवं संचालन श्री अतुलभाई खारा डलास ने किया।

अभूतपूर्व धर्मप्रभावना - डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा दिनांक 12 जून से 15 जुलाई तक लन्दन, शिकागो, अटलांटा, डलास एवं न्यूजर्सी में अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई। डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा दिनांक 2 जून से 5 जुलाई तक शिकागो, डलास, मियामी, ऑर्लेन्डो एवं अटलान्टा में प्रवचन एवं कक्षाओं का आयोजन हुआ।

इस वर्ष **पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर** द्वारा दिनांक 28 जून से 25 जुलाई तक अटलांटा, शिकागो, क्लीवलैंड एवं डलास में मार्मिक प्रवचनों के माध्यम से अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

सम्पादकीय –

विद्या और विज्ञान की वार्ता

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

संजू की चाटुकारिता रूपी गेंद को वापस उसी के पाले में फेंकते हुये विद्या ने कहा –''रहने भी दो, अधिक मक्खन मत लगाओ। अच्छा बोला ! क्या चलेगा ? ठंडा या गर्म ?''

साथ ही विज्ञान ने कहा –''कहिये, और नाश्ते में क्या मंगाया जाये ?''

संजू ने झेंपते हुये कहा –''नहीं, नहीं, अभी चाय नाश्ते की जरूरत नहीं है।''

''क्यों संजू भाई ! क्या आप सभी काम जरूरत के हिसाब से ही करते हो ?''– विद्या ने फिर हल्की-सी चुटकी ली।

विज्ञान और विद्या के इस अप्रत्याशित आदर भाव एवं व्यंग्य विनोद से संजू यह निर्णय नहीं कर पाया कि वास्तविकता क्या है? इस कारण वह सशंकित बना रहा। उसे किसी मनीषी की यह उक्ति स्मरण हो आई कि 'स्त्री के चरित्र को और पुरुष के भाग्य को जब देवता ही नहीं जान पाते, तब पुरुषों की तो बात ही क्या है।'

उसने सोचा –''इस विद्या से तो सदैव सावधान ही रहना होगा। राजू भी बार-बार यही कहता है।

इसकी बातों में कितना तीखापन है, व्यंग्य के सिवाय सीधे मुँह बात ही नहीं करती। ठीक है, सब देख लूँगा।''– सोचते-सोचते वह कुछ देर विचारों में उलझा रहा।

चाय प्रस्तुत करते हुये जब विज्ञान के नौकर रामू ने उसका ध्यान भंग किया तो पास में खड़ी विद्या से वह बोला –''भाभी आप ठीक-ठाक तो हैं न ?''

विद्या ने उत्तर में कहा –''हाँ, वैसे तो सब ठीक ही है, पर...।''

पर क्या ? देखो, कोई बहाना नहीं चलेगा, तुम्हें और विज्ञान को हमारे कल के कार्यक्रम में तो आना ही पड़ेगा। समझे !''

विज्ञान की नस दबाने के उद्देश्य से विद्या को सुनाते हुये संजू पुन: बोला –''विज्ञान ! तुम इतने दिनों से नहीं आये, इसके पीछे कुछ 'दाल में काला' दिखता है। किसी और के चक्कर में तो नहीं आ गये ?''

अपनी सफाई देते हुये नि:शंकता और निर्भयता के साथ विज्ञान ने कहा –''नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं है मित्र ! पर इन दिनों कहीं जाने-आने का और किसी से मिलने-जुलने का मन ही नहीं हुआ।''

व्यंग्य विनोद करते हुये अज्जू बोला –''क्या भाभीजी के प्यार-मोहब्बत में ऐसे फंस गये कि हम सबको बिलकुल ही भूल गये ? कभी-कभी तो दर्शन दे ही दिया करो। तुम्हारे बिना तो महफिल में बहुत ही सूनापन लगता है।''

राजू ने आदेश की भाषा में कहा –''ऐसा नहीं चलेगा विज्ञान! तुम्हारे बिना तो हमारी महफिल का रंग ही फीका हो जाता है, सारा मजा ही किरकिरा हो जाता है। और हाँ सुनो ! कल तो तुम्हें आना ही है, हर हालत में आना है। कल का कार्यक्रम तो तुम्हारी ही पसन्द का, केवल तुम्हारे लिये ही किया जा रहा है। जिसका नृत्य-गान देखकर तुम झूम पड़े थे, उसे ही कल क्लब में आमंत्रित किया है। उसका नाच-गान तो अच्छा है ही, रूप-रंग में भी वह किसी 'विश्व सुन्दरी' से कम नहीं है।

तुम्हें तो आना ही है, भाभीजी को भी साथ में लाना नहीं भूलना। हमें भी तो नाचने के लिये कोई साथ चाहिये न ? क्यों संजू ठीक है न ?''

''हाँ, भाई ! राजू ठीक ही तो कहता है। अकेले-अकेले क्या मजा आयेगा ?'' संजू ने हाँ में हाँ भरते हुये कहा।

विद्या को उनके हावभाव और भाषा से यह समझते देर नहीं लगी कि 'इन्हें विज्ञान की किसी खास कमजोरी का पता है और ये उस कमजोरी को उजागर करने का भय दिखाकर उसे दबाकर उसका अनुचित लाभ तो उठा ही रहे हैं, उसी चालाकी भरी चाल से मुझे भी दबाकर मेरा भी अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं।''

साथ ही वह यह भी भाँप गई कि ''संभवत: संजू में मेरे प्रति प्रतिशोध की भावना भी है। अत: ये सब मिलकर एकबार फिर मेरी इज्जत पर धावा बोलकर मुझसे बदला भी लेना चाहते हैं। अन्यथा ये मेरे ही सामने यह खुला चेलेंज कैसे दे सकते थे कि हमें भी तो कोई साथी चाहिये न ?

इसका तो साफ-साफ यही अर्थ है कि विज्ञान मेरे ही सामने उस नाचने वाली आमंत्रित मेहमान महिला के साथ नाचे और मैं इन भेड़ियों के साथ...। पर मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगी।

इसके लिये पहले मुझे विज्ञान को इनके बारे में सब कुछ सही-सही बताकर अपने विश्वास में लेना होगा, ताकि ये मेरे सुखमय जीवन के रस में विष न घोल सकें। और विज्ञान को भी विश्वास दिलाना होगा कि तुम्हारे बारे में कोई कुछ भी कहे, उसका मुझ पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा। अत: तुम मेरी ओर से निश्चिन्त हो जाओ। तभी विज्ञान इनके दबाव से मुक्त हो सकेगा और ये लोग भी उससे अनुचित लाभ नहीं उठा सकेंगे।

दूसरे, विज्ञान की व्यापारिक अनियमितताओं को नियमित कराना होगा और विज्ञान को समझाना होगा कि –''इस दो नम्बर के धन्धे में, तथा इन अनियमितताओं में ऐसा लाभ ही क्या है ? आकुलता और अशान्ति की तुलना में कुछ भी तो हाथ नहीं लगता। कमाई का अधिकांश हिस्सा तो ऊपर के लेन-देन में ही चला जाता है, केवल अपराध बोध ही तो अपने पल्ले पड़ता है। क्यों न इसे समाप्त कर दिया जाये ?

और मिलता भी हो तो ऐसी कमाई भी किस काम की, जिसमें शान्ति से बैठकर न खा सके और न सो सकें। वैसे भी कौन–सी कमी रहने वाली है ? फिर रोज–रोज ये ब्लैकमेल के चक्कर...?

नियमित काम करने से हमें तो लाभ ही लाभ है; पर हमारी इस कमजोरी से लाभ उठाने की खोटी नियत रखने वाले संजू और उनके साथियों को हमारा सहयोग बन्द होते ही अवश्य ही आटे–दाल का भाव मालूम पड़ जायेगा। जरा सी कमजोरी के कारण हमारे ही बल पर हमें ही अकड़ दिखाते हैं और जिसका नमक खाते हैं उसी की हाँडी में छेद करते हैं। दुष्टों पर दया करना भी तो दया का दुरुपयोग है।

किसी ने ठीक ही कहा है –

''कांटा कांटे से निकलेगा, विष होगा विष से निर्मूल।
दुष्टों पर अनुकम्पा करना, यही सज्जनों की है भूल।।''

विद्या बड़बड़ाई –''संजू बार–बार सींखचों के अन्दर बन्द कराने का जो भय दिखाता है, सो फिर मैं यह भी देख लूंगी कि 'कौन किसको सींखचों में बन्द कराता है।' यदि यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब दूसरों को जेल में बन्द कराने वाला संजू स्वयं ही जेल में दिखाई देगा। कोई जमानत देने वाला भी नहीं मिलेगा। बहुत दादागिरी करता फिरता है...।''

उधर विज्ञान सोच रहा था कि –''मेरे बारे में विद्या से जो कुछ भी कहना हो कह लेने दो – विद्या ऐसी कोई नादान नहीं है जो मेरी असलियत को न समझे और इनके बहकावे में आ जावे। अत: एकबार सब तिया–पाँचा हो लेने दो, ताकि बार–बार की झंझट ही न रहे। यदि मैं स्वयं ही विद्या को अपनी वे सब कमजोरियाँ बता दूँ, जिनका भय दिखाकर ये मुझे दबाते हैं, तो ऐसा कोई कारण नहीं, जो वह मुझे माफ न करे। रही बात व्यापार सम्बन्धी कागजातों की, सो उन्हें भी किसी तरह ठीक–ठाक करा लेते हैं। बस, फिर न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।''

विज्ञान वैसे तो बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति था, अत: जिस बात पर भी गहराई से विचार करता तो अच्छे निष्कर्ष पर ही पहुँचता था, पर कुछ दिनों से संजू और राजू जैसे मित्रों के चक्कर में आ जाने से सुरा और सुन्दरी की ऐसी चाट लग गई थी कि उसकी याद आते ही सब गुड़ गोबर हो जाता था।

सुरा और सुन्दरी के व्यसन वस्तुत: ऐसे खोटे व्यसन हैं कि उनकी एकबार चाट लग जाने पर आसानी से नहीं छूटते।

जब उसे संजू का अतिआग्रह भरा बुलावा मिला, जिसमें उसकी ही मनपसन्द नृत्यांगना को आमंत्रित किया गया था, तो वह स्पष्ट मना नहीं कर सका, उसका मन फिसलता और पैर लड़खड़ाते देख विद्या को बाध्य होकर उसके सभी मित्रों का कच्चा चिट्ठा विज्ञान के सामने खोलना ही पड़ा।

उसने बताया –''विज्ञान ! तुम्हें क्या पता है – ये भोला–भाला दिखने वाला संजू वही संजू है, जिसने गर्ल्स हॉस्टल की दीवार लाँघकर सुनीता की इज्जत खराब की थी और इस राजू के बारे में तुम्हें क्या बताऊँ – यह कितना बदतमीज है – पता है, इसने तो मेरे ऊपर ही डोरे डालने चाहे थे। वह तो मैं ही थी, जो इसके चंगुल से बच पायी थी।

सौभाग्य से मेरे पापा को मेरे ऊपर पूरा भरोसा था, अत: मैंने निर्भय होकर उनको वह सबकुछ साफ–साफ बता दिया था, जो–जो इसके और मेरे बीच घटा था। अन्यथा इसने तो मुझे भी ब्लैकमेल करने की कम कोशिश नहीं की।

बेचारे अन्नू व अज्जू यद्यपि सीधे–साधे हैं, पर इनके चक्कर में पड़कर उन्होंने भी अपनी गृहस्थी बर्बाद कर ली है। जो तुम्हारी प्रिय नृत्यांगना आज आने वाली है, जानते हो वह कौन है ? वह अन्नू की ही धर्मपत्नी है। अन्नू एक गरीब आदमी जो ठहरा। ये सब मिलकर उसके सीधेपन और गरीबी का नाजायज फायदा उठा रहे हैं और उसी के सामने–उसकी पत्नी की कमर और गले में हाथ डालकर उसके साथ नाच–नाचकर उसकी इज्जत लूट रहे हैं।

कल्पना करो, उसके दिल पर क्या गुजरती होगी ? पर बेचारा करे तो करे भी क्या ? मजबूरी में अपना मुँह नहीं खोल सकता। बैठा–बैठा सबके साथ एक नकली हँसी हँसता रहता है। मानो खुद पर ही हँस रहा हो और स्वयं से पूछ रहा हो कि ''जो अपनी पत्नी का पेट नहीं पाल सकता और उसकी रक्षा नहीं कर सकता, इज्जत नहीं बचा सकता, उसे क्या हक है शादी करने का ?''

विज्ञान यदि तुम अपना भला चाहते हो तो भूलकर भी इनके दबाव में नहीं आना, अन्यथा तुम्हारी और मेरी भी ये अन्नू जैसी ही दुर्दशा करके छोड़ेंगे।

और सुनो, इनसे डरने की कोई बात नहीं, अपने घर की बात अपन आपस में ही निबट लेंगे। भूलें किससे नहीं होतीं; पर सुबह का भूला शाम को भी यदि घर आ जावे तो भूला नहीं कहलाता।

इतना कहते–कहते विद्या का गला भर आया, वह आगे कुछ नहीं बोल सकी।

विद्या की दृष्टि में दृष्टि मिलते ही विज्ञान की भी आँखें पश्चाताप के आँसुओं से गीली हो गईं। ●

बालकों को पाठशाला में भेजिये, धर्म का प्राथमिक ज्ञान दीजिये

यह उनके, हमारे और सबके हित की बात है।

हम बालकों को तभी तक कुछ सिखा सकते हैं, जब तक वे हमसे सीखते हैं, बाद में यह हमारे बस की बात नहीं।

''श्री वीतराग–विज्ञान पाठशालाएँ हमारे अपने बालकों के स्वर्णिम, सात्त्विक और गौरवमय जीवन की आधारशिला है।''

– महामंत्री, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(सोलहवीं कड़ी, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछली कड़ी में हमने पढा कि किस प्रकार ''मैं कौन हूँ'' इस तथ्य के यथार्थ निर्णय के अभाव में मेरा मात्र अनादिकाल से आज तक का समय ही नहीं वरन यह जीवन ही बिना निष्कर्ष ही बीत रहा है, बचपन गया, किशोरावस्था भी बीती, अब देखें जवानी और वृद्धावस्था में हमारे साथ क्या घटित होता है। पढिये –

कितनी आकर्षक थी यह जवानी ! मुझमें ऊर्जा अपने उत्कर्ष पर थी, अब मैं पहिले की भांति (बचपन और किशोर अवस्था) कमजोर व किसी पर निर्भर भी न रहा था, भोगों के प्रचुर साधन भी उपलब्ध थे और भोगने की क्षमता भी; पर क्या मैं उन्हें भोग पाया ?

नहीं।

क्यों नहीं ?

क्योंकि जीवन में भले ही जवानी हो पर कल्पना में तो बुढापा दस्तक देने लगा था न !

मैंने औरों की रुग्ण, कमजोर, लाचार, असहाय और करुण उस वृद्धावस्था को देख लिया था जो कि मेरा संभावित भविष्य था।

मैं अपने आपको उस करुण स्थिति में नहीं धकेलना चाहता था और इसलिये बस, मैं सोना तो चाहता था पर सोया नहीं।

मैं खाना भी चाहता था पर मैंने खाया नहीं।

हालांकि तब नींद भी बहुत गहरी हुआ करती थी और कुछ भी खाओ सब पच जाता था, पर मैं मात्र इसलिए भूखा ही बना रहा, इसीलिये मैं चैन से सो भी नहीं सका; क्योंकि मुझे तो अपने भविष्य की चिन्ता थी न !

मैं हर हाल में स्वस्थ ही बने रहता चाहता था इसलिए मखमली सेजों को छोड़कर मैं सुबह मुँह अंधेरे उठकर पथरीली सड़कों पर दौड़ लगाता।

घोड़ों की तरह दौड़ता और कुत्ते की तरह हांफता।

सामने राजसी पकवान सजे रहते और मैं दरिद्री की भांति नापतोल कर रूखा–सूखा, थोड़ा–बहुत खाता और ठहर जाता।

स्वस्थ बने रहने की चाहत में मैं अपने वर्तमान स्वस्थ जीवन के स्वर्णिम पल जी ही कब पाया ? मैं भविष्य के लिए कमाने में इतना व्यस्त हो गया कि कमाए हुए को भोगने का न तो होश ही रहा और न ही अवकाश; क्योंकि मुझे अपना आर्थिक भविष्य जो सुरक्षित करना था।

मेरी भविष्य की चिन्ता और भविष्य के बारे में मेरा चिन्तन मेरे वर्तमान को सदैव ही आन्दोलित किये रहा।

मेरा प्रबल पुण्योदय तो देखिए, मेरे साथ मेरे बुढापे में ऐसा कुछ भी घटित नहीं हुआ जो अधिकतम लोगों के साथ होता है, इसके विपरीत मुझे अपनी इस वृद्धावस्था में जगत का वह सारा वैभव और अनुकूलताएँ प्राप्त हुई जो इस जगत में संभव है, सत्ता, यश, निरोगी काया, घर में माया, अनुकूल पत्नी और आज्ञाकारी पुत्र तथा भरापूरा परिवार।

यदि यही सब हमें सुखी कर सकते हैं तो मुझे इस दुनिया का सबसे सुखी प्राणी होना चाहिए।

पर नहीं, मुझे तो पलभर के लिए चैन और सुकून नहीं है।

जैसे–जैसे सभी लोग और अन्य सब संयोग मेरे प्रति अनुकूलतम परिणमित होते हैं, मैं गहरे और गहरे अवसाद में डूब जाता हूँ कि कौन जाने कब यह सब छूट जायेगा, बिखर जायेगा।

यदि सच पूछा जाये तो यूं रोने–बिलखने और अफसोस करने के लायक मेरे पास कुछ भी नहीं है पर अब मैं इस आशंका से पीड़ित हूँ कि ये सब अनुकूल संयोग, यह देह जाने किस दिन, किस पल छूट जायेंगे और मेरा न जाने क्या होगा।

क्यों हुआ यह सब ?

यह इसलिये हुआ क्योंकि उस वक्त वर्तमान का 'मैं' जो था, वह मैं रहने वाला नहीं था, क्योंकि सचमुच तो वह 'मैं' था ही नहीं न !

उस वक्त मैं शिशु या बालक था पर मैं कुछ ही समय में बालक रहने वाला नहीं था।

जब मैं किशोर था, तब कुछ ही वर्षों में मैं किशोर भी रहने वाला नहीं था।

जब मैं जवान हुआ तो मुझे मालूम था कि यह जवानी अधिक समय टिकने वाली नहीं, यह ''मैं'' नहीं; क्योंकि मैं वह नहीं था इसलिये मैं उसमें रम नहीं सकता था, उसमें मग्न होकर गाफिल नहीं हो सकता था।

आज जब मैं अपने उत्कर्ष पर हूँ, अब तो मेरा संकट और गहरा गया है, अब तो मेरे सामने अस्तित्व का संकट ही आ खड़ा हुआ है।

अब तक मुझे आने वाला कल दिखाई तो देता था, कुछ तो दिखता था।

अब तो सिर्फ और सिर्फ मौत ही दिखाई देती है और मौत के सिवाय कुछ भी दिखाई ही नहीं देता। कल मैं परमात्मप्रकाश तो रहूंगा ही नहीं, मनुष्य भी नहीं रहूँगा, तब 'मैं' क्या हो जाऊँगा, मैं रहूँगा भी या नहीं ?

कहीं इसी के साथ मेरा अस्तित्व ही तो खत्म नहीं हो जायेगा ?

अब तक जो भी सही, जैसा भी सही, भविष्य तो दिखाई देता था, अस्तित्व तो खतरे में नहीं दिखता था; पर अब क्या ?

इसप्रकार 'मैं' को पहिचाने बिना ममत्व के अभाव में मैं स्वयं अपने लिये ही बेगाना बना रहा, अपना हुआ ही नहीं।

ऐसा क्यों हुआ ? इसके कारणों की व्याख्या समझने के लिये पढें इस शृंखला की अगली (सत्रहवीं) कड़ी, अगले अंक में – **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई–मेल द्वारा भेजें।

यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें।

– महामंत्री, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

स्वीकृति भेजने का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, मो.9785643202(पीयूष जैन)E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

वनिता बोधिनी शिविर संपन्न

करेली (उ.प्र.) : यहाँ आध्यात्मिक प्रयोगशाला एवं कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर के तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 18 जून तक वनिता बोधिनी शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचनों के अतिरिक्त ब्र. ममता दीदी टीकमगढ, ब्र. आरती दीदी छिन्दवाड़ा एवं ब्र. रजनी दीदी श्योपुर का का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

दशलक्षण पर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण–पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई–मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण–पत्र तत्काल भिजवायें। **– महामंत्री, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

आप अपने आमंत्रण पत्र निम्न पते पर भेज सकते हैं–

पत्राचार का पता – **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.–0141–2705581, 2707458, मोबा. 09785643202 (पीयूष जैन) E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

हार्दिक बधाई !

(1) मेरठ (उ.प्र.) निवासी श्री निशांत जैन पुत्र श्री सुशील कुमार जैन ने आई.ए.एस. परीक्षा में देशभर में **13वाँ स्थान** एवं हिन्दी मीडियम में **प्रथम स्थान** प्राप्त किया है। आप वर्तमान में लोकसभा में राजभाषा अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। ज्ञातव्य है कि आप मेरठ युवा फैडरेशन के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

(2) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के स्नातक डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन ने **'के.जे. सोमैया सेन्टर फॉर स्टडीज इन जैनिज्म'** विद्याविहार मुम्बई में निदेशक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है।

ज्ञातव्य है कि मुम्बई विश्वविद्यालय से संबद्ध एवं विद्याविहार मुम्बई स्थित इस संस्था में जैनदर्शन से संबंधित प्रमाण–पत्र, डिप्लोमा, एडवांस डिप्लोमा, प्राकृत भाषा अध्ययन, एम.ए., पी.एच.डी. आदि पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं, जो अत्यल्प शुल्क पर उपलब्ध हैं। इच्छुक व्यक्ति **संपर्क करें –** केबिन नं. 7 व 8, द्वितीय तल, के.जे. सोमैया मैनेजमेण्ट इंस्टीट्यूट बिल्डिंग, विद्याविहार, मुम्बई–400077,फोन–022–21023209, 67283074 E-mail : jaincentre@somaiya.edu

(3) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक आशीष जैन टोंक, राहुल जैन नौगांव, जयेश जैन उदयपुर एवं नवीन जैन उज्जैन का उत्तरप्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग में एल.टी. शिक्षक (टी.जी.टी. के समकक्ष) पद पर चयन हो गया है।

इस उपलब्धि हेतु जैनपथप्रदर्शक एवं टोडरमल महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

शोक समाचार

(1) मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती शान्तिदेवी जैन का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 1600–1500/– रुपये प्राप्त हुये।

(2) बांसवाड़ा (राज.) निवासी श्रीमती मानुदेवी धर्मपत्नी श्री प्रकाशचंद शाह का दिनांक 19 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों–यही मंगल भावना है।

सामायिक एवं ध्यान शिविर संपन्न

गाजियाबाद : यहाँ अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद एवं आशा इण्डिया के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 10 से 12 जुलाई 2015 तक दिगम्बर जैन मंदिर वसुन्धरा में सामायिक एवं ध्यान विषय पर त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय मंत्री डॉ. अशोकजी गोयल शास्त्री द्वारा प्रतिदिन दोनों समय व्याख्यान हुये। शिविर के संयाजक श्री नरेन्द्रजी जैन वसुन्धरा एवं संयोजक श्री एम.पी. जैन इन्दिरापुरम थे।

– अखिल बंसल, महामंत्री

दृष्टि का विषय

14 चतुर्थ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब यहाँ कोई कहे कि अध्यात्मियों को व्यवहारनय का प्रयोग नहीं करना चाहिए तो मैं पूछता हूँ कि –

हजार वर्ष के इतिहास में आजतक सबसे बड़ा अध्यात्मी कौन हुआ है ? यदि इस बात का निर्णायक हम पण्डित टोडरमलजी को माने तो पण्डित टोडरमलजी ने कहा है कि 'यदि सिद्धान्त का अध्ययन करना है तो गोम्मटसार का स्वाध्याय करना और यदि अध्यात्म जानना है तो 'आत्मख्याति का स्वाध्याय करना' – इसप्रकार पण्डित टोडरमलजी ने अमृतचंद्राचार्यजी को सर्वश्रेष्ठ अध्यात्मी माना है।

उन्हीं आचार्य अमृतचन्द्र ने अपने 'पुरुषार्थसिद्धयुपाय' नामक ग्रन्थ में व्यवहारनयों के कथनों का अत्यधिक प्रयोग किया है।

उन्होंने माँस–मदिरा के खान–पान के निषेध की जितनी भी गाथाएँ लिखी हैं, वे सभी व्यवहारनय की हैं। 'अहिंसा' का जितना भी विवेचन उन्होंने किया है उसमें ४४वीं गाथा निश्चयनय की है, अन्य अधिकांश वर्णन व्यवहार से ही किया है। अणुव्रत, महाव्रत, गुणव्रत आदि का जो भी वर्णन इस ग्रन्थ में किया है, वह सब व्यवहारनय की अपेक्षा से है।

इसप्रकार आचार्य अमृतचन्द्र ने जो कि सबसे बड़े अध्यात्मी थे, व्यवहारनय के कथनों का अत्यधिक प्रयोग किया है।

इसलिए ऐसा कथन नहीं करना चाहिए कि ''अध्यात्मियों को व्यवहारनय का प्रयोग नहीं करना चाहिए, बाकी लोग कर सकते हैं।''

वास्तव में कथन तो ऐसा है कि ''आत्मानुभूति के काल में निश्चय को ही मुख्य करना चाहिए, व्यवहार को नहीं'' तो लोगों ने 'आत्मानुभूति के काल में' यह तो छोड़ दिया और बाकी यह कथन ग्रहण कर लिया कि ''निश्चय को मुख्य रखना चाहिए, व्यवहार को नहीं।

पण्डित टोडरमलजी ने रहस्यपूर्णचिट्ठी में 'बृहद् नयचक्र' की एक गाथा उद्धृत की है, जो कि इसप्रकार है –

तच्चाणेसणकाले समयं बुज्झेहि जुत्तिमग्गेण।
णो आराहणसमये पच्चक्खो अणुहवो जह्मा।।

तत्त्व के अवलोकन (अन्वेषण) का जो काल, उसमें समय अर्थात् शुद्धात्मा को युक्ति अर्थात् नय–प्रमाण द्वारा पहले जानो। पश्चात् आराधन के समय में जो अनुभवकाल, उसमें नय–प्रमाण नहीं है; क्योंकि अनुभव प्रत्यक्ष है।

इसप्रकार इस गाथा में व्यवहारनय के प्रयोग का निषेध तो अनुभव के काल में किया है, तत्त्व के अन्वेषण के काल में तो इसका समर्थन किया है। जो लोग यह कहते हैं कि – **''निश्चय को ही मुख्य रखना, व्यवहार को नहीं'', उन लोगों को अभी तत्त्वान्वेषण का काल चल रहा है या अनुभूति का काल चल रहा है ? निश्चितरूप से तत्त्वान्वेषण का ही काल चल रहा है।**

वास्तव में तो निश्चय से ज्यादा व्यवहार का काल है। जिनको सम्यग्दर्शन प्राप्त नहीं हुआ है, उनको तो हमेशा व्यवहार ही मुख्य है; क्योंकि उनका तो पूरा काल तत्त्वान्वेषण का ही है।

अविरत सम्यग्दृष्टि को भी १५ दिन से छह महीने तक में कभी–कभी क्षणिक अनुभूति होती है, उसके अतिरिक्त समग्र काल तो व्यवहार का ही काल है।

पंचम गुणस्थानवर्ती जीव को एक मुहूर्त से पन्द्रह दिन में कभी–कभी क्षणिक अनुभूति होती है, अत: उस काल के अतिरिक्त उसका भी सम्पूर्ण काल व्यवहार का ही है।

सच्चे वीतरागी मुनिराजों को भी २४ घंटे में कुल मिलाकर ८ घंटे ही अनुभूति रहती है। १६ घंटे तो उनका भी व्यवहारकाल रहता है। अतएव उनका भी तत्त्वान्वेषण का काल अनुभूति के काल से दुगुना है।

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उन ८ घंटे में भी लगातार अनुभूति नहीं रहती है; क्योंकि यदि विशिष्ट अन्तुर्मुहूर्त भी लगातार अनुभूति रह जाए तो केवलज्ञान की उत्पत्ति हो जाये।

अतएव तत्त्वान्वेषण के काल में व्यवहार मुख्य रहता है और अनुभूति के काल में निश्चय। इसप्रकार व्यवहारनय की भी उपयोगिता है, उसको पूर्णतया नहीं उड़ाया जा सकता है।

अरे भाई ! जिसप्रकार गुणों का अभेद द्रव्यार्थिकनय का विषय है और गुणभेद पर्यायार्थिकनय का, प्रदेशों का अभेद द्रव्यार्थिकनय का विषय है और प्रदेशभेद पर्यायार्थिकनय का, द्रव्य का अभेद अर्थात् सामान्य द्रव्यार्थिकनय का विषय है और द्रव्यभेद अर्थात् विशेष पर्यायार्थिकनय का; उसीप्रकार काल का अभेद द्रव्यार्थिकनय का विषय है और कालभेद पर्यायार्थिकनय का विषय है।

यदि काल के भेद और अभेद दोनों ही निकाल देंगे तो भगवान आत्मा काल से खण्डित हो जाएगा फिर वह सम्पूर्ण भगवान आत्मा नहीं रहेगा और उसके आश्रय से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं होगी।

जो–जो पर्यायार्थिकनय का विषय है,उन सभी की पर्याय

संज्ञा है और जो-जो द्रव्यार्थिकनय का विषय है, उन सभी की द्रव्य संज्ञा है।

जिनकी 'द्रव्य' संज्ञा है, वे दृष्टि के विषय में शामिल हैं और जिनकी 'पर्याय' संज्ञा है, वे दृष्टि के विषय में शामिल नहीं हैं।

इसप्रकार अध्यात्म में गुणभेद, प्रदेशभेद, द्रव्यभेद एवं कालभेद – इन सभी की पर्याय संज्ञा है अर्थात् गुणभेद, प्रदेशभेद, द्रव्यभेद, कालभेद – ये पर्यायें द्रव्यार्थिकनय का विषय नहीं बनती हैं अर्थात् ये दृष्टि का विषय भी नहीं बनती हैं।

सामान्य, अभेद, नित्य और एक – इनकी अखण्डता द्रव्यार्थिक नय का विषय है, इनमें भी जो इनका ये **'चारपना' है, वह दृष्टि का विषय नहीं है, वह पर्यायार्थिकनय का विषय है अर्थात् 'चार' का ये जो भेद हैं, यह भेद पर्यायार्थिक नय का विषय हैं।**

जैसे – किसी मन्दिर के निर्माण के लिए चन्दा माँगने के लिए किसी के पास जाएँ और वे चार भाई हों तो वे एक लाख रुपये लिखाते हुए कहते हैं कि हमारा एक लाख रुपया लिख दो। फिर दूसरे भाई से चंदा के लिए कहा जाये तो वे कहते हैं कि हम सब तो एक ही हैं, अलग-अलग नहीं हैं तो उनसे कहा कि भाईसाहब ! ऐसा कैसे हो सकता है ?

आप सभी की दुकानें अलग-अलग हैं, रसोई भी अलग-अलग बनती है तो वे कहते हैं कि दरअसल बात यह है कि घर में थोड़ी बनती नहीं है न; इसलिए अलग-अलग रहते हैं; लेकिन समाज के लिए तो हम एक ही हैं। इसप्रकार वे दस-दस साल तक समाज में एक ही बने रहते हैं; लेकिन पाटियों पर नाम लिखने की बात आने पर उनसे जब यह कहा जाता है कि नाम भी किसी एक का ही लिख देंगे तो वे कहते हैं कि नहीं, नहीं; नाम तो चारों के ही लिखने होंगे।

इसप्रकार जगत में तो मुख्य-गौण करने में हम बहुत चतुर होते हैं। जब पैसे देने का मामला आता है तो हम एक मिनिट में एक हो जाते हैं, भेद का भी अभेद हो जाता है; लेकिन जब पाटियों पर नाम लिखने का मामला आता है तो फिर अलग-अलग नाम लिखने का कहकर जुदे-जुदे हो जाते हैं। इसप्रकार जगत में मुख्य-गौण तो कितनी तेजी से बदलता है।

इसीप्रकार आचार्य भी कहते हैं कि जब आत्मा का निर्णय करना हो, तब निश्चय को मुख्य करना।

जब खान-पान का निर्णय करना हो तो क्या खाना चाहिए क्या नहीं खाना चाहिए, गुरु के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ? इन सभी का निर्णय करना हो तो व्यवहारनय को मुख्य कर लेना चाहिए।

जैसे – आजकल तो सभी वाहन आटोमेटिक हो गये हैं, उनमें गतियंत्र दबाना ही नहीं पड़ता है। एक बार यदि स्थापित (सैट) कर दिया तो गियर भी स्वत: ही परिवर्तित होते रहते हैं। सबकुछ स्वत: होता रहता है; **उसीप्रकार यदि हम भी एक बार तत्त्वज्ञान के अभ्यासी हो जायेंगे, फिर हमें भी सोच-सोचकर कुछ नहीं करना पड़ेगा। सहज ही समय-समय पर निश्चय और समय-समय पर व्यवहार मुख्य हो जाएगा।**

यदि व्यवहार को गौण करना है तो निषेध करने का नाम गौणता नहीं है, उसके बारे में कुछ नहीं कहना ही गौणता का लक्षण है।

निषेध करना और प्रतिपादन करना तो मुख्य का लक्षण है, गौण का नहीं।

अरे भाई ! ''दृष्टि के विषयभूत आत्मा में पर्यायें नहीं हैं'' – ऐसा कहकर हमने पर्यायों को गौण नहीं किया है; अपितु मुख्य ही किया है। हम मना करके गौण नहीं कर रहे हैं; क्योंकि गौण तो चुप्पी का नाम है।

यदि व्यवहार को दिनभर गालियाँ देकर हम यह समझते हैं कि हम व्यवहार को गौण कर रहे हैं तो यह हमारी भूल है। हमने दिनभर ही व्यवहार को मुख्य रखा है। सारे दिन ही हमारे माथे पर व्यवहार हावी रहा है। **व्यवहार के बारे में चर्चा नहीं करने का नाम ही व्यवहार को गौण करना है।**

जैसे – कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से यह कहे कि मैंने तुम्हारी सभी पुरानी बातें गौण कर दीं, मुझे पता है कि तुमने मुझे कितनी गालियाँ दी थीं; लेकिन मैंने सब कुछ गौण कर दिया है। तुम कितने नालायक हो, यह भी मैं जानता हूँ; लेकिन मैंने सब गौण करके तुम्हें माफ कर दिया है। मैं यह भी जानता हूँ कि तुम जैसा नालायक कोई नहीं होगा और मेरे जैसा कोई माफ करनेवाला नहीं होगा; तो ये शब्द उसके क्षमादान को प्रदर्शित नहीं करते; क्योंकि यदि उसने वास्तव में माफ कर दिया होता तो उसके मुँह से ऐसे शब्द निकल ही नहीं सकते थे। ये शब्द तो यह बता रहे हैं कि वह भूल ही नहीं पा रहा। उसने उन पुरानी बातों को पुन:-पुन: कह कर गौण नहीं किया है; अपितु मुख्य ही किया है।

जैसे – एक व्यक्ति को अन्य व्यक्ति से एक लाख रुपये लेना हो; लेकिन उसके पास इतने रुपये देने को नहीं हों अथवा वह व्यक्ति उससे अपने रुपये वसूल नहीं कर पा रहा हो तो वह कहता है कि मैंने एक लाख रुपये छोड़ दिए। वह ऐसी घोषणा करता है; लेकिन रुपये देनेवाले की जब एक करोड़ की लॉटरी खुल जाती है तो वह उस व्यक्ति को एक लाख रुपये वापस करता है; अब यदि

वह छोड़नेवाला उससे रुपये ले लेता है तो फिर उसने रुपये कहाँ छोड़े ? इसका नाम छोड़ना नहीं है।

छोड़ने का मतलब तो यह है कि यदि वह उसे रुपये वापस देता है तो वह यह कहे कि मैं तो छोड़ चुका हूँ, लेकिन यदि रुपये वसूल नहीं हो रहे हों तो वह यह कहे कि 'मैंने छोड़ दिए', तो इसका नाम छोड़ना नहीं है।

वास्तव में गौण कहते किसे हैं ? हमें अभी यह भी सीखना पड़ेगा।

यदि 'जगत व्यवहार' एक समय को भी गौण हो जाये तो तुरंत सम्यग्दर्शन हो जाये और सम्यग्दर्शन है नहीं, इसका मतलब यह है कि एक समय को भी व्यवहार गौण हुआ नहीं है; क्योंकि निश्चय तो अनुभव के काल में प्रकट होता है, अभी तो व्यवहार ही है। ●

मोक्षमार्गप्रकाशक अब ताम्रपत्र पर

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी द्वारा रचित मोक्षमार्गप्रकाशक अब ताम्रपत्र पर छपकर तैयार हो चुका है। इसका विमोचन श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर, हल्दियों का रास्ता, जयपुर में प्रस्तावित है। ज्ञातव्य है कि इसी मंदिर में पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक की रचना की थी। ग्रंथ विमोचन के समय व तिथि की घोषणा यथासमय की जायेगी। जिन किन्हीं भाइयों को अपने मंदिर में इस अमूल्य धरोहर को विराजमान करने का भाव हो, वे **संपर्क करें –** मनोज कुमार जैन (चीनी वाले), मोबाइल नं. 7599301008, डॉ. संजीवकुमार गोधा, मोबाइल नं. 9829064980

इस वर्ष 46 विद्यार्थियों को प्रवेश

- डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के निर्देशन में संचालित, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा एक नया कीर्तिमान।
- सभी प्रथम श्रेणी के छात्र। अधिकतम 93% के 2 छात्र एवं 80% से अधिक वाले 11 छात्र। म.प्र. से 26, उ.प्र. से 4, राज. से 5, महा. से 5, कर्ना. से 5 एवं तमिल. से 1 – इसप्रकार कुल 46 छात्र।
- 5 वर्ष में बनेंगे जैनदर्शन के अधिकारी विद्वान
- जयपुर में चल रहा है युगान्तरकारी महाअभियान
- ज्ञानतीर्थ द्वारा महान ज्ञानयज्ञ
- वर्तमान में 166 विद्यार्थी अध्ययनरत
- अब तक 678 से अधिक शास्त्री विद्वान बने
- देशभर में तत्त्वज्ञान के प्रचार में संलग्न

(ज्ञातव्य है कि यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिये सम्पूर्ण 5 वर्षों के लिये आवास, भोजन इत्यादि सभी स्तरीय व्यवस्थायें नि:शुल्क हैं।)

निबंध प्रतियोगिता परिणाम घोषित

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ प्रियकारिणी महिला मंडल के तत्त्वावधान में हुई निबंध प्रतियोगिता का परिणाम दिनांक 27 मई को डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी की अध्यक्षता में घोषित हुआ।

'जैनदर्शन में कर्म सिद्धांत : एक चिन्तन' विषय पर आयोजत इस प्रतियोगिता में कुल 68 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं, जिनमें से 13 को पुरस्कृत किया गया। प्रथम स्थान कुमारी मंजूषा जैन इन्दौर, द्वितीय स्थान ब्र. प्रीति जैन खनियांधाना, तृतीय स्थान श्री दिनेशजी जैन छिन्दवाड़ा ने प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त 10 अन्य प्रविष्टियों को भी पुरस्कृत किया गया।

जैना कन्वेन्शन संपन्न

अटलांटा (अमेरिका) – यहाँ जैन एसोसिएशन इन नॉर्थ अमेरिका **(JAINA)** द्वारा प्रत्येक दो वर्ष में आयोजित होने वाला समग्र जैन समाज का महासम्मेलन इस वर्ष दिनांक 2 जुलाई से 5 जुलाई तक सम्पन्न हुआ।

इस सम्मेलन में जैनों के सभी सम्प्रदायों से लगभग चार हजार (4000) लोगों की उपस्थिति रही। इस महाप्रसंग पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** के 'अहिंसा : महावीर की दृष्टि में' विषय पर दो मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** जयपुर के 'जीवन जीने की कला' विषय पर दो प्रवचन हुये।

ज्ञातव्य है कि इस महासम्मेलन में भट्टारक चारुकीर्तिजी मूढबद्री एवं श्वेताम्बर जैनों के अनेक सम्प्रदायों के साधु-साध्वीगण भी उपस्थित थे।

धर्मप्रभावना

मियामी-फ्लोरिडा (अमेरिका) : यहाँ दिनांक 16 जून से 22 जून तक **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा** जयपुर के प्रतिदिन प्रात: 'अपूर्व अवसर' विषय पर एवं सायंकाल 'सात तत्त्व/नव पदार्थ' विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व डलास एवं शिकागो में भी आपके द्वारा महती धर्मप्रभावना हुई। आपके द्वारा ऑर्लेन्डो के शान्ति-निकेतन में भी स्वाध्याय/तत्त्वचर्चा का लाभ मिला।

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127